जंगल रो रहा है

शशांक बाबू चमेली गाँव के मूल निवासी हैं । मगर लगभग चालीस सालों से शहर में रहते हैं । सरकारी नौकरी करते हैं । एक दिन उनके बचपन के साथी रमेश बाबू उनेक घर पर आए । बोले – ''यार, शशांक ! तुम तो बेगाने हो गए । जब से गाँव छोड़ा, मुँह फेरकर देखा तक नहीं । चलो, अपनी पुश्तैनी जगह तो देख लो ।''

दोनों साथी खुशी–खुशी गाँव के लिए चल पड़े । बस रुकी । नीचे उतरे । शशांक ने चारों तरफ नजर दौड़ाई । अचम्भा हुए । बोले – ''रमेश, हमारा गाँव कहाँ है ? सड़क के किनारे आम के सैकड़ों पेड़ कहाँ हैं । पास की पहाड़ी साँवली भी नहीं दिखती । पहाड़ी की तलहटी से गाँव के छोर तक फैले वे हरेभरे सुहावने जंगल कहाँ हैं । किस रेगिस्तान में लाकर पटक दिया ? कहाँ जाना है तुमको ?''

''अपना गाँव भी नहीं पहचानते । पाँच सौ कदम आगे ही तो अपनी चमेली है । हाँ, आम के पेड़ों का अब नामोनिशान नहीं है । पहले शाल, सागौन जैसे जंगल कट गये । फिर आम, जामुन भी नहीं रहे । लोगों को लकड़ी की जरूरत थी । मकान के चौखट – दरवाजे, किवाड़ – खिड़कियाँ, मेज-कुर्सियाँ बनते बनते सब लकड़ी तबाह हो गई । जंगल सफाचट हो गये हैं । तुमने ठीक ही कहा । अब हम रेगिस्तान ही में रहते हैं ।''

''हाँ, अखबारों में बराबर खबरें छपती हैं कि जंगल साफ हो गये हैं। धरती का उत्ताप बढ़ रहा है। गर्मी की वजह से तो शहर में रहना मुश्किल हो गया है। फरवरी से कूलर, ए.सी. चलने लगते हैं। लेकिन दूर से ये अजीब सी आवाज क्या है ? कभी सन-सनन् झन्-झनन् तो कभी खाँव-खाँव। सन्नाटे की मायूशी सो अलग।'' शशांक ने पूछा।

रमेश बोले – ''ये आवाजें उस पहाड़ की तरफ से आती हैं। पेड़ – पौधे न रहे। कुछ झाड़ – झंखाड़ ही तो बचे हैं। उनकी सूखी डंठलें, सूखे–कच्चे पत्ते आपस में टकराते हैं तो ऐसी अजीबो-गरीब आवाज पैदा होती है। मानो जंगल सिसक रहा हो। हिचकियाँ लेता हो। रो रहा हो।''

''पेड़ लगाते क्यों नहीं ?'' शशांक ने उतावली से पूछा। ''मालूम है, सरकार पेड़ लगवाने के लिए करोड़ों रुपये खर्च करती है।''

''लेकिन लोगों की योजना अपने ढंग से चलती है। पौधे लगा दिये जाते हैं, सिंचाई नहीं होती। सूख जाते हैं। जो थोड़े से भाग्यशाली तने मुट्ठी भर के होते हैं तो काट लिए जाते हैं। इस हाथ दो उस हाथ लो।'' रमेश ने समझाया।

''तब तो ये खबरें सही हैं कि जंगलों की भारी कटाई से पेड़–पौधे सब साफ हो गये हैं। ताप बढ़ रहा है। मौसम मनमाना करता है। ठीक से बारिश नहीं होती। इसमें खेती क्या खाक होगी। हिमालय की बर्फ पिघल रही है। समुद्र का पानी बढ़ रहा है। हमारा गाँव ही नहीं; सारा देश खतरे में है।''शशांक ने कहा।

तभी गाँव के दूसरे छोर से कुछ हल्ला हुआ। रमेश ने बताया कि जंगल न रहने से जंगली जानवर; खासकर हाथियों का झुण्ड गाँवों में घुस आता है। जंगल में पेट नहीं भरता तो क्या करें। उनको भगाने के लिए लोग शोरगुल करते हैं। वनवासी लोग कष्ट में हैं। वनजात द्रव्य नहीं मिलते। शेर, बाघ, भालू, सियार, जैसे जानवरों की संख्या भी एकदम कम हो गई है। चिड़ियों की कई नस्लें तो खत्म हो चुकी हैं।

दोनों ने सोचा – जंगल को बचाना होगा। पेड़ ही जीवन है। जंगल बचाओ तो दुनिया बचेगी। जंगल अपना दुखड़ा नहीं रोता। मानव के लिए रोता है। प्राणीजगत के लिए रोता है। सही कहा गया है– जंगल में ही मंगल है। पर कौन सुनता है ? हमारी बातें अरण्यरोदन न बन जाएँ। जंगल में घुसो मत। वह अपने आप हराभरा हो जाएगा।

रवीन्द्रनाथ मिश्र

शिक्षक के लिए:

जंगल की कटाई से प्रकृति में असंतुलन उत्पन्न होता है और हमें प्राकृतिक आपदाएँ झेलनी पड़ती हैं। छात्रों को इस सत्य से परिचित कराने के लिए शिक्षक पहले की जंगल-स्थिति और आज की जंगल-स्थिति का एक तुलनात्मक चित्र प्रस्तुत करेंगे ताकि 'पेड़ लगाओ-देश बचाओ' के नारे को वे अपने जीवन में कार्य का रूप देने को प्रवृत्त हों।

शब्दार्थ :

बेगाना	–	पराया
पुश्तैनी	–	बापदादे की
अचम्भा	–	अचरज
तलहटी	–	पहाड़ के नीचे की जमीन

छोर	–	सीमा
सुहावना	–	सुखद
रेगिस्तान	–	मरुभूमि
नामोनिशान	–	अस्तित्व का चिह्न
मायूशी	–	निराशा
डंठल	–	पतली डाली
मनमाना	–	स्वेच्छा
खतरा	–	विपत्ति
नस्ल	–	जाति
अरण्यरोदन	–	पहले घने जंगल होते थे। वहाँ कोई रोता तो दूसरा सुन भी नहीं पाता था। मतलब बेकार का रोना। अब अरण्य का रोदन कोई नहीं सुनता।

अनुशीलनी

प्रश्न१. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर बताइए:

(i) शशांक बाबू किस गाँव के निवासी हैं?

(ii) शशांक बाबू कितने सालों से शहर में रहते हैं?

(iii) शशांक बाबू के मित्र का नाम क्या था?

(iv) सड़क के किनारे पहले कौन-से पेड़ थे?

(v) पहाड़ पहले कैसी थी?

(vi) जंगल साफ हो जाने से धरती का क्या बढ़ रहा है?

(vii) सूखे कच्चे पत्ते आपस में टकराने से क्या लगता है?

(viii) ताप वढ़ने का कारण क्या है?

प्रश्न २. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

(i) शशांक बाबू को क्यों अचम्भा हुआ ?

(ii) रेगिस्तान का क्या मतलब है ?

(iii) रमेश ने जंगल की क्या दशा बताई ?

(iv) जंगल कटने से क्या नतीजा हुआ ?

(v) अखबारों में क्या-क्या खबरें छपती हैं ?

(vi) पौधे लगाने पर भी जंगल क्यों नहीं पनपता ?

(vii) जंगल बचाने के लिएअब हमें क्या करना चाहिए ?

प्रश्न३. सही विकल्प चुनिए:

(क) हिमालय की बर्फ पिघल रही है। क्योंकि :

(i) दोपहर को सूरज की किरणें गर्म हो जाती हैं।

(ii) जंगल में आग लग जाती है।

(iii) विश्व का ताप बढ़ रहा है।

(ख) हाथियों का झुण्ड गाँवों में घुस आता है। क्योंकि :

(i) लोग हाथियों का आदर करते हैं।

(ii) जंगल में चारे लगाए जाते हैं।

(iii) जंगल अब कट गए हैं।

(ग) दुनिया बचेगी, यदि :

(i) हम जंगल की रक्षा करेंगे।

(ii) हम जंगल काट देंगे।

(iii) शहर में बडे-बडे कारखाने चलाए जाएँगे।

भाषा कार्य

इनका अभ्यास कीजिए

एकवचन		बहुवचन	एकवचन		बहुवचन
कुर्सी	-	कुर्सियाँ	अखबार	-	अखवार
नौकरी	-	नौकरियाँ	बाघ	-	बाघ
खिड़की	-	खिड़कियाँ	सियार	-	सियार
तलहटी	-	तलहटियाँ	शेर	-	शेर
पहाडी	-	पहाड़ियाँ	जंगल	-	जंगल
मुट्ठी	-	मुट्ठियाँ	पेड़	-	पेड़
हिचकी	-	हिचकियाँ	हाथी	-	हाथी
एकवचन		**बहुवचन**	**एकवचन**		**बहुवचन**
डंठल	-	डंठलें	पत्ता	-	पते
बात	-	बातें	खतरा-	-	खतरे
मेज	-	मेजें	तना	-	तने
नजर	-	नजरें	पौधा	-	पौधे
खबर	-	खबरें	कच्चा	-	कच्चे
आवाज	-	आवाजें	दरवाजा	-	दरवाजे
सड़क	-	सड़कें	कमरा	-	कमरे

प्रश्न ४. नीचे लिखे शब्दों के विशेषण पाठ से छाँटिए।

---------- पेड़,-------- जंगल, ------ आवाज,

---------तने, -------- लोग ------ द्रव्य

प्रश्न ५. इन शब्दों को देखिए, और ऐसे दस शब्द लिखिए :

खुशी - खुशी
हरे - भरे
नामो - निशान
मेज - कुर्सी

प्रश्न ६. ऐसे पाँच शब्द बनाइए :

जैसे–बे + गाने, बे + रोजगार

प्रश्न ७. इनके पर्यायवाची शब्द लिखिए :

साथी, ताप, झुण्ड, कष्ट, संख्या, दुनिया, जंगल (ऐसे कुछ अन्य शब्दों को भी छाँटिए, और उनके समानार्थी शब्द जानिए।)

प्रश्न ८. निम्नलिखित शब्द बहुवचन में आए हैं। इनके एक वचन के रूप लिखिए :

सुहावने, खिड़कियाँ, आवाजें, कुर्सियाँ, पत्ते, सूखे, खबरें, किनारे, खतरे, पौधे।

प्रश्न ९. कोष्ठक में दिए गए उपयुक्त विभक्ति चिह्नों से खाली जगहें भरिए : (से, में, के, ने, का)

(i) शशांक बाबू चमेली गाँव ----- मूल निवासी हैं।
(ii) मगर वे लगभग चालीस सालों ---- शहर में रहते हैं।
(iii) आम के पेड़ों --------अब नामोनिशान नहीं है।
(iv) अखबारों --- बराबर खबरें छपती हैं।
(v) दोनों ----- सोचा।

प्रश्न १०. 'क' स्तंभ के शब्दों के साथ 'ख' स्तंभ के सही विपरीतार्थक या विलोम शब्दों का मिलान कीजिए :

'क'	'ख'
नीचे	विदेश
रोना	दानव
देश	ऊपर
मानव	गीला
सूखा	हँसना

नीचे लिखे शब्दों के रूप देखिए :

बचपन	=	बच्चा + पन			
अकेलापन	=	अकेला + पन			
कालापन	=	काला + पन			
गर्मी	=	गर्म + ई	गुरुत्व	=	गुरु + त्व
दूरी	=	दूर + ई	मनुष्यता	=	मनुष्य + ता
खुशी	=	खुश + ई	साधुता	=	साधु + ता
कटाई	=	कट + आई			
पढ़ाई	=	पढ़ + आई			
सिंचाई	=	सींच + आई			
मिलावट	=	मिल + आवट			
लिखावट	=	लिख + आवट			
बनावट	=	बन + आवट			
वीरत्व	=	वीर + त्व			
सतीत्व	=	सती + त्व			

इन शब्दों के अंत में जो अंश जोड़े गए हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं। इनको जोड़ने से जो शब्द बने हैं, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

नीचे लिखी गई भाववाचक संज्ञाओं के प्रत्ययों को अलग कीजिए :

स्वच्छता, अकेलापन, स्त्रीत्व, लड़कपन, सनसनाहट, बंधुत्व, गरीबी, सुन्दरता, दिखावट,लड़ाई।

आपके लिए काम

आप कुछ तरकीबें सोचें जिससे जंगल का दु:ख कम हो। पेड़ न काटे जाएँ। हरियाली से सभी सुखी हों। क्या पेड़ लगाएँ ? क्या जंगल की सुरक्षा करें ?

इस पर कक्षा में शिक्षक का सहयोग लेकर एक भाषण-प्रतियोगिता का आयोजन कीजिए।

सोचकर बताइए :

(i) हर विद्यार्थी को पेड़ काटने से कैसा लगता है, वह कक्षा में खड़ा होकर सबको बताए।

(ii) हाथियों का झुण्ड बस्ती में क्यों आता है ?

(iii) आजकल बाघ और हाथियों की सुरक्षा करने के क्या-क्या उपाय किए गए हैं ?

(iv) पहले शाम और भोर में सियार बोलते थे। आजकल उनकी आवाज क्यों नहीं सुनाई देती ?

(v) जंगल के बारे में अखबारों में क्या-क्या खबरें छपती हैं ?